Dr.Raman Kumar Thakur Assistant professor (Guest)
Department of Economics, D.B.College, Jaynagar,
Madhubani.

Class:-B.A.part-2(H)Date :-18.08.2020.

Lecture n.-17.

Topic:- "उत्पादन के सिद्धांत(Theories of Production)"

उत्पादक का उद्देश्य उत्पत्ति की क्रियाओं द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। इसके लिए वह उत्पादन की मात्रा में अधिक से अधिक वृद्धि करना चाहता है।लेकिन उत्पत्ति के विभिन्न साधनों का सदैव किसी निश्चित अनुपात में बढ़ाना संभव नहीं होता, उत्पत्ति के कुछ साधनों की पूर्ति अन्य साधनों की तुलना में सीमित रहती है, अतः उत्पादन प्रक्रिया सीमित मात्रा में करना होता है। उत्पादक उत्पत्ति के साधन की उपलब्धता के आधार पर उसका प्रयोग कम या अधिक मात्रा में कर सकता है।

* उत्पादन फलन उत्पादन के साधनों तथा उत्पाद की मात्रा के संबंध को उत्पादन फलन कहते हैं। यह आगतो(Inputs) अथवा साधनों तथा निर्गत (Output)अथवा उत्पाद के बीच तकनीकी संबंध को प्रकट करता है, जिसका आशय यह है कि

Scanned with CamScanner

आगत में परिवर्तन उत्पादन को किस प्रकार प्रभावित करता है। सांकेतिक रूप में उत्पादन फलन को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है: X=f(a,b,c,.....n)

जहां x= उत्पाद की मात्रा, तथा a,b,c,.....n साधनों की मात्रा ।

'f' फलन का संकेत है अर्थात उत्पाद की मात्रा साधनों की मात्रा से प्रभावित होती है, अर्थात उत्पाद की मात्रा साधनों की मात्रा से प्रभावित होती है।

* उत्पादन फलन की विशेषताएं(Importance of Production function):-1).उत्पादन फलन एक अभियंत्रिकी धारणा है। क्योंकि उत्पादन फलन उत्पत्ति साधनों की मात्रा एवं उनके द्वारा उत्पादित वस्तु की मात्रा के भौतिक संबंधों को प्रदर्शित करता है।

2).उत्पादन फलन का कीमत से कोई संबंध नहीं होता।

3). उत्पादन फलन का संबंध समय अवधि से होता है अर्थात उत्पादन का समय अवधि के अनुसार उत्पादन फलन का स्वरूप भी बदलता रहता है । 4).उत्पादन फलन के विश्लेषण में तकनीकी स्तर को स्थिर मान लिया जाता है ।

5).उत्पादन फलन की कोई मौद्रिक विशेषता नहीं होती हैं ।

Scanned with CamScanner

6). उत्पादन फलन में उत्पत्ति साधनों में स्थानापन्न ता का गुण पाया जाता है।

7). उत्पादन फलन भौतिक अर्थशास्त्र का विषय है।

Scanned with CamScanner